इंडियन नहीं, भारतीय खिलाड़ी- नीरज चौपड़ा

अपने शानदार प्रदर्शन से सुर्खियों में रहे। हेडमा लड़ीक युवा भारतीय खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक लाकर गर्व के साथ देश का नाम ऊँचा किया है। नीरज एक खिलाड़ी ही नहीं बल्कि एक सैनिक भी है जो 5 वर्षों से भारतीय सेना में सेवारत है।

पानीपत हरियाणा के छोटे-से गाँव खंडरा में नीरज चोपड़ा का जन्म साधारण से किसान परिवार में हुआ। गोल-मटोल 80 किलो के नीरज जब कुर्ता-पायजामा पहनकर गाँव की गलियों में निकलते थे तो उनके साथी प्रेम से उन्हें सरपंच कहकर बुलाते थे। मात्र अपनी फिटनेस ठीक करने के उद्देश्य से पानीपत के स्टेडियम में गए नीरज ने एक दिन यूँ ही दूसरों के कहने पर भाला उठा लिया। कौन जानता था 11 वर्ष का यह बालक एक दिन विश्व-विजेता बनेगा और इस प्रकार से उनकी सबसे बड़ी साथी बनी उनकी पूंजी जो उन्हें उनके देसी रहन-सहन और खानपान के साथ विरासत में मिली थी।

अपने पिता को आदर्श मानने वाले नीरज विश्व प्रतियोगिता जीतने के बाद भी अपनी देसी लुक और आत्मविश्वास के लिए सुर्खियों में बने रहे। विश्व प्रतियोगिता जीतने के बाद भी भारतीय सेना का यह जवान अपने राष्ट्र ध्वज का सम्मान नहीं भूला। जहाँ एक तरफ अन्य खिलाड़ियों द्वारा कंधे पर रखे गए उनके राष्ट्रीय ध्वज उनके बगल वाली कुर्सी पर विस्मृत कपड़े की भाँति पड़े थे। वहीं नीरज ने अपने राष्ट्रीय ध्वज को सम्मानपूर्वक लपेटकर रखा। सफलता के शिखर पर पहुँचनेवालों में निश्चित कुछ ऐसी गुणवत्ता होती है।

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जब पत्रकारों ने उनसे अंग्रेजी में प्रश्न पूछना चाहा तो उन्होंने अपनी मातृभाषा हिंदी में ही बात करने का आग्रह किया उस समय उनका आत्मविश्वास एवं अपनी भाषा के प्रति प्रेम स्पष्ट दिखाई दे रहा था। विषय यहाँ पर अंग्रेजी अथवा किसी अन्य विदेशी भाषा के ज्ञान का नहीं है अपितु किसी भी भाषा के संस्कार का है। कोई भी भाषा उस समाज का आईना होती है। भारतीय भोजन शैली को भी यदि हम देखें तो हमारे पास सैकड़ों पकवान हैं जिनके लिए हमारी सभी भारतीय भाषाओं में संबोधन है किंतु पिज्जा, बर्गर, कटलेट, केक, पेस्ट्री जैसे हानिकारक भोज्य पदार्थों के लिए हमारी किसी भी भारतीय भाषा में कोई शब्द ही नहीं है। क्यों? क्योंकि ये सब भोज्य पदार्थ हमारे भारतीय खान-पान का हिस्सा कभी रहे ही नहीं। प्रत्येक समाज की एक आवश्यकता होती है, जिसके अनुसार उस समाज के दार्शनिकों एवं वैज्ञानिक जिन्हें भारतीय समाज में ऋषि कहा गया, कुछ सिद्धांतों, कानूनों एवं मर्यादाओं का पालन करते हैं। अब यदि हम विदेशी भाषाओं को ज्ञान का आधार मानकर उनके चरित्र का पालन करने लगेंगे तो निश्चित ही हम हमारी आवश्यकताओं के विपरीत सिद्धांतों का अनुसरण करने लगेंगे जिसका परिणाम केवल और केवल विनाशकारी होगा। यही हुआ भी है। कभी विश्व गुरु रहा भारत आज गुलामी की अदृश्य बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।

आज जब एक खिलाड़ी एक देश का सैनिक विश्व पटल पर जाकर निर्भीक होकर अपनी मातृभाषा में ही उत्तर देने को अधिक महत्व देता है तो यह हमारे संपूर्ण समाज को हमारी युवा पीढ़ी को जगाने का प्रयास ही तो कर रहा है। वह हमें बताना चाहता है कि बिना किसी का अनुकरण किए बिना अपनी मिट्टी से जुड़े रहकर भी हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

जिन अंग्रेजों ने 200 वर्षों तक भारत भूमि को केवल लूटने का काम किया है आज उनकी भाषा बोलने में यदि हम गौरवान्वित महसूस करें तो यह मानसिक गुलामी नहीं तो और क्या है? गुलामी की इन बेड़ियों को तोड़कर एक बार फिर हमें भारत को विश्व गुरु बनाना है। जिसकी शुरुआत हो चुकी है। हमारी युवा पीढ़ी जाग रही है, जिसका स्पष्ट उदाहरण है नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ी। आज शायद नीरज स्वयं भी अपनी सफलता से जुड़े इस राज से अनभिज्ञ हों किंतु यह बात एकदम सत्य है। पिज्जा और हानिकारक पेय पीने वाले बच्चे शायद अभी इतने बड़े नहीं हुए कि किसी विश्व प्रतियोगिता में पदक ला सकें। इसलिए आज भी खेलों में सर्वाधिक प्रदर्शन करने वाले युवा खेलों में सर्वाधिक प्रदर्शन करने वाले युवा भारत के गाँवों से ही आ रहे हैं।

देश चाहे खेलों में प्रदर्शन का हो अथवा सीमा पर जाकर निडर होकर राष्ट्र की रक्षा करने का, आज भी सर्वाधिक युवा जो इस कार्य को कर रहे हैं वे किसान परिवारों से ही हैं। वे किसान परिवार जो आज भी अपनी मिट्टी, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता से जुड़े हैं, वे किसान जो आज भी दूध-घी पीकर खेतों में मेहनत करते हैं।

जब नीरज चोपड़ा से भी उनकी डाइट, उनकी सेहत के विषय में पूछा गया तो उन्होंने भी गाय के दूध को ही भोजन का महत्वपूर्ण अंग बताया। किसी करोड़ों का प्रचार करने वाली विदेशी कंपनी के कोल्ड्रिंक उत्पाद को नहीं। नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ी अन्य खिलाड़ियों के लिए भी आदर्श हैं जिन्हें हमारा अखबार दिल से सलाम करता है और उम्मीद करता है कि अन्य क्रिकेट खिलाड़ियों की भाँति यह खिलाड़ी भी विदेशी कंपनियों के कोल्ड्रिंक उत्पाद के मायाजाल में फँसकर न रह जाए।

वंदे मातरम् । वंदे मातरम् ।। वंदे मातरम् ।।।

email : pallavatimes@yahoo.co.in

विशिष्ट सोच ने दिलाया नया मुकाम

विदुर माहेश्वरी ने ''चायवाले'' शब्द को किया प्रतिष्ठित

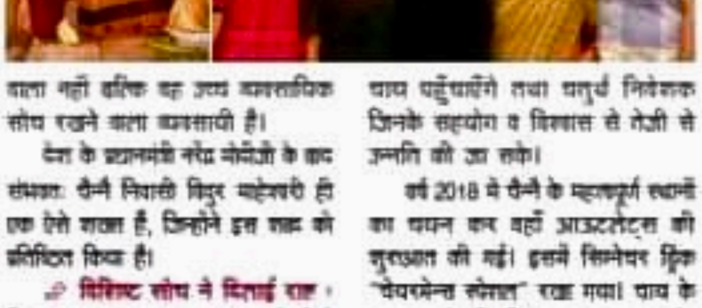

विदुर माहेश्वरी को चाय का बिजनेस शुरू करने का आइडिया दरअसल अपने घर से ही मिला। वह बताते हैं कि उनके पिताजी हर रोज करीब 15 कप तक चाय पीते हैं। यहीं से उन्हें चेन्नै में चाय का बिजनेस शुरू करने का आइडिया आया। चेन्नै में अच्छी चाय नहीं मिलती और ऐसे में लोग खराब चाय पीने के बजाय अच्छी कॉफी पीना पसंद करते हैं।

विदुर माहेश्वरी कैसे बनाते हैं अच्छी चाय? : चाय वाले में क्वालिटी पर खास फोकस किया जाता है। गुणवत्ता के लिए चाय की पत्तियाँ सीधे असम से लाई जाती हैं इसमें बिचौलिए भी नहीं होते, जिससे लागत कम आती है। कॉम्पटीशन पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं देते, बल्कि उनके लिए सबसे जरूरी बात ये है कि वह चेन्नै में चाय को भी अहम् बना रहे हैं।

लंदन से पढ़े हैं विदुर : उन्होंने चाय का बिजनेस किसी मजबूरी से नहीं शुरू किया, बल्कि सोच-समझकर एक प्लान बनाकर किया। उन्होंने लंदन के किंग्स कॉलेज से बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री हासिल की हुई है। वे कॉफी के विकल्प पर चाय बनाते हैं, ना कि हम लोगों की तरह। चाय में भी उनकी तमाम वैरायटी हैं, जैसे दूध की चाय, हर्बल चाय, ब्लैक टी और आइस टी। इतना ही नहीं, उनके मेन्यू में पेपरमैन स्पेशल चाय भी है, जिसमें नींबू, शहद, अदरक और चाट मसाला मिला होता है।

शिखर यात्रा की ओर "चाय वाले" - विदुर कहते हैं कि सच्चा व्यवसायी वह है, जो मिट्टी को भी अपनी व्यावसायिक सोच से सोना बना सकता है। उन्होंने चाय के आउटलेट जैसे व्यवसाय को अपनी सूझबूझ से कॉर्पोरेटलुक दिया।

"चाय वाले" ये शब्द सुनते ही हमारे अंदर एक अत्यंत सामान्य सोच उत्पन्न होती है। वह किसी गुमटी या छोटी से दुकान से चाय बेचनेवाला अदना-सा चाय वाला नहीं बल्कि वह उच्च व्यावसायिक सोच रखने वाला व्यवसायी है।

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी के बाद संभवतः चैन्नै निवासी विदुर माहेश्वरी ही एक ऐसे शख्स हैं, जिन्होंने इस शब्द को प्रतिष्ठित किया है।

विशिष्ट सोच ने दिखाई राह : विदुर का जन्म 11 जून 1994 को चैन्नै में ख्यात व्यवसायी नारायण व राजश्री माहेश्वरी (राठी) के यहाँ हुआ था। विदुर बीकानेर के समाजसेवी स्व. कृष्णमोहनलाल राठी के सुपौत्र हैं। बचपन से ही उन्हें व्यावसायिक सोच संस्कारों के रूप में प्राप्त हुई। पिताजी स्टील तथा इन्वेस्टमेंट व फायनेंस के व्यवसाय से संबंधित थे।

उन्होंने वर्ष 2012 में सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा में 96 प्रतिशत अंक लाकर विशिष्ट स्थान बनाया। विदुर ने लंदन के प्रतिष्ठित किंग्स कॉलेज से बिजनेस मैनेजमेंट में उपाधि पूर्ण कर फिर हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से एडवांस कोर्स पूर्ण किया।

एक नयी सोच से उत्पन्न "चाय वाला" : उच्च शिक्षा के बाद अपना पैतृक रूप से सुस्थापित व्यवसाय सम्भालकर आराम से जीवनयापन करने का अवसर था लेकिन वे कुछ नया करना चाहते थे। विदुर ने पाया कि इन दोनों व्यवसायों में मुनाफा अच्छा है लेकिन ये संगठित व्यवसाय न होने से शिखर को नहीं छू पाये।

बस इसी सोच ने बेवरेज व्यवसाय में "क्विक सर्विस रेस्टोरेंट (क्यूएसआर)" की स्थापना की प्रेरणा दी। इस सोच के साथ उन्होंने वर्ष 2018 में अपने स्टार्टअप "चाय वाले" की शुरुआत की।

ऐसे पायी शिखर की सफलता : विदुर माहेश्वरी की सोच बिल्कुल नयी व अत्यंत चुनौतीपूर्ण थी। उन्होंने इस चुनौती के लिए सबसे पहले अपने आपको तैयार किया। उन्होंने प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य व उच्च गुणवत्ता तथा त्वरित सेवा की सोच बनायी। इसके लिये अपने चार सफलता के सूत्र तय किये, प्रथम ग्राहकों का संतुष्टीकरण, दूसरा उचित प्रबंधन व टीमवर्क, तृतीय वेन्डर जो ग्राहकों तक चाय पहुँचायेंगे तथा चतुर्थ निवेशक जिनके सहयोग व विश्वास से तेजी से उन्नति की जा सके।

वर्ष 2018 में चैन्नै के महत्वपूर्ण स्थानों का चयन कर वहाँ आउटलेट्स की शुरुआत की गई। इसमें सिग्नेचर ड्रिंक "पेपरमेन्ट स्पेशल" रखा गया। चाय के साथ नाश्ते की भी व्यवस्था उपलब्ध है। हर आउटलेट की बिक्री शीघ्र ही 1300-1500 कप प्रतिदिन तक पहुँच गई। चाय ऑन व्हील एक नया प्रयास है जो कि शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है। लोगों कि माँग पर वैरायटी राईस दोपहर भोज (लंच) भी शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है।

कोविड-19 बना परीक्षक : कोविड-19 कई व्यवसायियों के लिए ऐसा परीक्षक बनकर सामने आया जिसने उनके व्यवसायों की कमियों को दूर करके रख दिया। विदुर ने कोविड की प्रथम लहर के ठीक पूर्व ही इसकी शुरुआत की थी। ऐसे में यह समय किसी चुनौती से कम नहीं था।

कुछ गिने-चुने आउटलेट्स से प्रारम्भ यह व्यवसाय 24 माह में 14 से अधिक आउटलेट्स तक जा पहुँचा। 5 और आउटलेट्स तो अभी प्रारम्भ होने ही वाले हैं। उनका लक्ष्य मार्च 2023 तक 40-45 आउटलेट्स चेन्नै में पहुँचाने का है। दूसरा लक्ष्य सन् 2027-28 तक सम्पूर्ण भारत में आउटलेट्स खोलने का है। साथ ही 2032-33 तक भारत से बाहर विदेशों में भी आउटलेट्स खोलने की योजना है।

निवेशकों ने भी सराहा : विदुर माहेश्वरी का स्टार्टअप "चाय वाले" उनकी कितनी सुलझी हुई सोच का नतीजा है, इसका प्रमाण हम इसी से लगा सकते हैं कि उनकी इस कम्पनी को मई 2020 में 1.75 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त हो चुका है। "चाय वाले" को फंडिंग करने वालों में प्रमुख रूप से "जैन इन्वेस्टर्स" नामक ग्रुप है तथा साथ ही देश के कई ख्यात निवेशक भी शामिल हैं। दक्षिण भारतीय सुपरस्टार नयनतारा ने भी उन्हें समर्थन दिया है।

वह हृदय नहीं पत्थर है जिसमें स्वदेश प्रेम नहीं

देश ने 15 अगस्त को अपनी आजादी की 75वीं वर्षगाँठ मनाई है। भारत एक विशाल महान् देश है। इसमें अनेक धर्मानुयायी, विभिन्न, जातियों, भाषाभाषी लोग रहते हैं। वेशभूषा, खानपान, बोलचाल की दृष्टि से विभिन्नता लक्षित होती है। किन्तु इस अनेकता के पीछे एकता की भावना निहित रही है। यह यहाँ की सांस्कृतिक संस्कृति की विशेषता रही है।

एकता की इस अनुभूति ने हमें सामाजिक राजनैतिक जीवन के निर्माण में मदद की है। हमारे देश में धर्म एवं मजहब को मानने की पूरी स्वतंत्रता है। किंतु इसका अनुचित लाभ नहीं उठाया जाना चाहिए। धर्म व मजहब तभी तक है जब तक देश सुरक्षित है।

यदि देश की स्वतंत्रता ही खतरे में पड़ जाए तो हम और हमारा धर्म कहीं के भी नहीं रहेंगे। हमें उन बातों को प्रोत्साहित करना है जिनसे एकता की भावना मजबूत होती है। भावनात्मक एकता की सबसे अधिक आवश्यकता है।

वह हृदय नहीं पत्थर है जिसमें स्वदेश प्रेम नहीं। वास्तव में माता व मातृभूमि के मोह से मनुष्य मृत्यु तक मुक्त नहीं होता। इन दोनों के इतने उपकार होते हैं कि मानव उनसे आजीवन कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता।

मातृभूमि की आन, बान, शान की रक्षा के लिए अपने आपका बलिदान करने में जो परम आनंद प्राप्त होता है उसके अनुभव कुछ और ही हैं। देशहित के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने में जो सुख-शांति मिलती है, उसका मूल्य कोई सच्चा देशभक्त ही जान सकता है।

देश सेवा व परोपकार ही उसका धर्म होता है। देशवासियों के सुख-दुःख में ही उसका सुख-दुःख निहित होता है। उसकी अंतरात्मा स्वार्थ रहित होती है। देश की सर्वांगीण उन्नति के लिए स्वदेश प्रेम परम आवश्यक है, जिस देश के निवासियों को अपने देश के कल्याण में अपना कल्याण, अपने देश के अभ्युदय में अपना अभ्युदय समझना चाहिए।

भारत के बढ़ते कदम

भारत निरंतर प्रगति के पथ पर विकसित होता चला जा रहा है। आजाद भारत ने एक लंबी यात्रा पूरी कर ली है। अब उसकी योजनाओं का सुलझना प्रारंभ हो चुका है। अपनी उपलब्धियों को हम अक्सर कमतर आँका करते हैं। गर्व की अनुभूति में वह ताकत है जो आमजन में आकांक्षाओं व उम्मीदों का नया संचार करके उन्हें सामान्य से असामान्य ऊँचाईयों तक पहुँचा देती है।

गर्व की यह अनुभूति अवसाद व नाउम्मीदी के हताशा भरे दौर में भी एक अरब लोगों के आत्मबल को ऊँचा उठा सकती है। स्वतंत्र भारत की प्रगति पर हमें गर्व करना होगा। देश आज हर क्षेत्र में प्रगति की ओर अग्रसर है। अगर हम स्वार्थ से परे हटकर कार्य करें तो विश्व का कोई देश हमारी ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकता। जब तक यहाँ की जनता निजी स्वार्थ को नहीं त्याग देगी तब तक देश की प्रगति शून्य के समान है। देश पहले, धर्म-राजनीति बाद में, फिर देखें क्या लाभ मिलता है।

वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश प्रेम की भावना नहीं।

सच्ची आजादी तब ही हम जब निस्वार्थ होंगे।

- रामनिवास बजाज, हैदराबाद